[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 3803 **FC-2** **Your Roll No.....**

Unique Paper Code : 52051221

Name of the Paper : Hindi A

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. कबीर की भक्ति-भावना की विवेचना कीजिए।

अथवा

मीराबाई की कविता का काव्य-सौंदर्य उद्घाटित कीजिए। (10)

2. घनानंद की कविता का मूल प्रतिपाद्य लिखिए।

अथवा

बिहारी के दोहों का भाव स्पष्ट कीजिए। (10)

3. नागार्जुन **अथवा** रामधारी सिंह दिनकर का साहित्यिक परिचय दीजिए। (10)

4. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : (10)

(क) जप तप दीसैं थोथरा, तीरथ ब्रत बेसास।
सूवै सैं बल सेविया, यौं जग चल्या निरास।।
कबीर इस संसार कों, समझाऊँ कै बार।
पूंछ जु पकड़ै भेद की, उतर्‌या चाहै पार।।

अथवा

तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर ।
हम चितवाँ थे चितवो णा हरि, हिवड़ो बड़ो कठोर ।
म्हारी आसा चितवन थारी, और णा दूजा दौर ।
ऊभ्याँ ठाढ़ो अरज करूँ छूँ करताँ करताँ भोर ।
मीरा रे प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अँकोर ।।

(ख) मरतु प्यास पिंजरा-पर्‌यौ सुआ समै कैं फेर । (10)
आदर दै दै बोलियतु बाइसु बलि की बेर ।।
बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु ।
भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु ।।

अथवा

रूपनिधान सुजान लखें बिन आँखिन दीठि हि पीठि दई है ।
ऊखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं, सूल की मूल सलाक भई है ।
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि को मूदें महा अकुलानि मई है ।
बूड़त ज्यौं घनआनंद सोचि, दई बिधि ब्याधि असाधि नई है ।

(ग) हा! बन्धुओं के ही करों से बन्धु-गण मारे गये! (10)
हा! तात से सुत, शिष्य से गुरु स-हठ संहारे गये!
इच्छा-रहित भी वीर पाण्डव रत हुए रण में अहो!
कर्त्तव्य के वश विज्ञ जन क्या-क्या नहीं करते कहो ?

अथवा

तू तरूण देश से पूछ अरे
गूँजा कैसा यह ध्वंस राग ?
अम्बुधि-अन्तस्तल बीच छिपी
यह सुलग रही है कौन आग ?

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (5×3=15)

(क) आदि काल

(ख) संत काव्य

(ग) छायावाद

(घ) रामभक्ति काव्यधारा

(ङ) ब्रजभाषा

(600)